International Journal of Applied Research 2014; 1(1): 137-138

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 3.4
IJAR 2014; 1(1): 137-138
www.allresearchjournal.com
Received: 27-10-2014
Accepted: 28-11-2014

रजनी देवी
M.Phil Research Scholar,
Maharishi Dayanand
University, Rohatak,
Haryana, India

Correspondence
रजनी देवी
M.Phil Research Scholar,
Maharishi Dayanand
University, Rohatak,
Haryana, India

राही मासूम रज़ा के उपन्यास 'आधा गाँव' में निरूपित राजनीति

रजनी देवी

प्रस्तावना

सृजनशील साहित्यकार जिस युग में जीता है उस समय की मुख्य घटनाओं का जाने–अनजाने उसकी चेतना पर प्रभाव अवश्य पड़ता है। वे घटनाएँ, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, व सांस्कृतिक कोई भी हो सकती हैं। इनमें से किसी भी घटना का प्रभाव लेखक को लेखन के लिए प्रभावित कर सकता है। इसलिए कहा गया है कि साहित्य समाज का दर्पण है क्योंकि साहित्य में समाज विशेष की घटनाओं को आधार बनाकर कलात्मक रूप से प्रस्तुत किया जाता है।

राही मासूम रज़ा ने जिस युग को देखा। जिस परिवेश में वे पले–बढ़े उसी युग और परिवेश का चित्रण उन्होंने अपने रचना साहित्य में किया है। उनका साहित्य संसार सन् 1937 से आरंभ होता है और सन् 1984 तक पहुँचता है। भारतीय राजनीतिक इतिहास में सन् 1937 का विशेष महत्त्व है। सन् 1935 में प्रतिनिधि चुनाव कानून बनने के तहत 1937 में आम चुनाव हुए। इन चुनावों के परिणामों से साम्प्रदायिकता का नया दौर प्रविष्ट हुआ। राही मासूम रज़ा के उपन्यास 'आधा गाँव' में हमें स्वतन्त्रता पूर्व व स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् की राजनीति का यथार्थ चित्रण मिलता है।

भारत के साम्प्रदायिक वातावरण को हिन्दू और मुस्लमान दोनों के बुद्धिजीवी एवं अति महत्त्वकांक्षी नेताओं ने हवा दे रखी थी। अंग्रेजों की कूटनीतिपूर्ण चालों ने सहयोग दिया। उनकी फूट डालो, शासन करो की नीति ने इस अग्नि को भड़काया। राही मासूम रज़ा ने अपने उपन्यास 'आधा– गाँव' में साम्प्रदायिकता के ऐसे ही कारणों का वर्णन किया है।

हिन्दू–मुस्लिम संबंधों में कटुता उत्पन्न करने में नेताओं की स्वार्थपूर्ण भावनाओं को सफलता मिल रही थी। डॉ. शैलजा जायसवाल कहती है कि ''पाकिस्तान निर्माण में सबसे बड़ी बाधा हिन्दू–मुस्लिम सांझी संस्कृति के संस्कार थे। दोनों सदियों से साथ रहने के कारण भावात्मक स्तर पर जुड़े हुए थे। इन संस्कारों एवं संस्कृति को तोड़ने के लिए ही साम्प्रदायिक दंगे एवं तनावपूर्ण वातावरण उत्पन्न किया जा रहा था।''[1]

'आधा गाँव' उपन्यास में साम्प्रदायिक दंगों का प्रभाव गंगौली पर दिखाते हुए उन्होंने यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि कुछ लोगों की उत्तेजना एवं राजनीतिक स्वार्थ परक निर्णयों के कारण ही दंगे हुए, जिसका शिकार निर्दोष और साधरणजन समुदाय हुआ। 'आधा गाँव' में बारिखपुर के किसान स्वामी जी के उत्तेजित भाषण से उत्तेजित होकर अपने पड़ोसी मुसलमानों पर आक्रमण करने के लिए तैयार हो जाते हैं। लेकिन राही मासूम रज़ा ने राजनीति की आड़ में साम्प्रदायिक भावनाओं को भड़काने का सदा विरोध किया। वे तन्नू को माध्यम से कहते हैं कि ''नफरत और खौफ की बुनियाद पर बनने वाली कोई चीज़ मुबारक नहीं हो सकती।''[2] अतः जब हिन्दुवादी ताकतें हिन्दुओं को मुसलमानों के विरुद्ध भड़काती हैं तो मुस्लिम वादियों ने भी मुस्लमानों को भड़काने का कार्य किया। इस प्रकार दंगे भड़काने वाले नेता परदे की आड़ में ऐसी घिनौनी राजनीति का खेल खेलते हैं।

विभाजन के बाद और जमींदारी उन्मूलन से सब कुछ तित्तर–बित्तर हो गया था। जवान लड़के हिन्दुस्तान छोड़कर पाकिस्तान जा चुके थे। जिससे लड़कों की कमी होती जा रही थी। लेखक ने अपने उपन्यास में स्पष्ट चित्रित किया है कि जवान लड़कियों की संख्या बढ़ती जा रही थी विवाह की आयु होने पर विवाह की चिन्ता होना आम हो गया। राही जी कहते हैं, ''सैदानियों के कमरे बेटियों की कुआंरी जवानियों के बोझ से दुहेरी हुए जा रहे थे। इसलिए उनका वक्त बेटियों को कोसने में गुजरता था और बेटियाँ इस कमरे से उस कमरे में छिपती फिरती थी क्योंकि घर अब भी उतने ही बड़े थे और उनमें यादों की चुड़ैलें दिन–रात नाचा करती थी।''[3] ऐसी समस्याओं का सामना विभाजन के दौरान आम जनता को करना पड़ा जिसका वे चाहकर भी कोई हल नहीं निकाल पाते थे।

मुस्लिम लीग का भारतीय राजनीति परिदृश्य में महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। इनकी राजनीति में देश में साम्प्रदायिकता का बिजारोपण किया जिसका वर्णन राही मासूम रजा के उपन्यास 'आधा गाँव' में

देखा जा सकता है। 'आधा गाँव' में देश विभाजन के पूर्व से ही मुस्लिम लीग के समर्थकों ने राजनीति खेलना प्रारम्भ कर दिया था। ऐसी ही स्थिति तब देखने को मिलती है जब अलीगढ़ से काली शेरवानी पहने दो युवक गंगौली में वोट मांगने आते हैं और उनका सामना कम्मो से होता है। यह सवाल पूछने पर कि अलीगढ़ पाकिस्तान जाएगा या यहीं रहेगा उस पर बहस हो जाती है। अलीगढ़ से आया एक युवक कहता है, ''पाकिस्तान न बना तो ये आठ करोड़ मुसलमान यहाँ अछूत बनाकर रखे जाएँगे। हमारी मस्जिदों में गायें बाँधी जायेंगी और तो और जब हिन्दू आपकी माँ–बहन को निकाल ले जाएँ तो फर्याद न कीजियेगा।''[4]

वहीं कुछ युवक राजनेताओं की चालों को भली–भाँति समझते हैं। उन्हीं में से अलीगढ़ में पढ़ने वाला अब्बास एक है। वह गाँव वालों को जिन्ना की राजनीति के विषय में समझाता हुआ कहता है, ''हिन्दुस्तान के दस करोड़ मुसलमान कायदे–आज़म के पसीने पर अपना खून बहा देंगे। एक मरतबा पाकिस्तान बन गया तो मुसलमान ऐश करेंगे–ऐश। वह जोश में आ जाता है और खान अब्दुल गफ्फार खाँ वगैरह को बुरा भला कहने लगता है। ये लोग तो मुसलमानों को हिन्दुओं के हाथों बेचने पर तुले हुए हैं।''[5] लेकिन राजनीतिक चालें चलने वाले नेता हिन्दु–मुस्लिम के बीच वैमनस्य पैदा कर उनमें फूट डालकर अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं।

राही मासूम रज़ा ने अपने उपन्यास आधा गाँव में देश–विभाजन की त्रासदी से घुटती–पिसती जिन्दगी का दस्तावेज प्रस्तुत किया है। जिसका संकेत लेखक ने अपने उपन्यास के माध्यम ये दर्शाया है। आम जनता के दोहरे दर्द को दिखाकर विभाजन की स्पष्ट छवि को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया गया है। जो लोग विभाजन के समय पाकिस्तान चले गए वे कभी लौटकर नहीं आये और जो यहाँ रह गए वे यहाँ के होकर भी यहाँ के नहीं बन पाए। राही जी बताते हैं, ''लड़ाई की बात और थी। लड़ाई से तो लोग वापस आ जाते हैं। मगर पाकिस्तान से कोई वापस नहीं आता – तो क्या पाकिस्तान मृत्यु देश है।''[6]

यहाँ के मुसलमानों ने पाकिस्तान बनने के बाद इस सच्चाई को जाना कि अपनी स्वार्थपूर्ति के कारण राजनेताओं ने उनके साथ छल किया है। अन्यथा यहाँ के मुसलमान तो पाकिस्तान व भारत विभाजन के पक्ष में नहीं थे। राही जी तन्नू के माध्यम से विभाजन की कुछ सच्चाई को उजागर करते हुए कहते हैं, ''नफरत और खौफ की बुनियाद पर बनने वाली कोई चीज़ मुबारक नहीं होती वह सचमुच डर रहा था कि इस नफरत का अंजाम क्या होगा। क्या सचमुच हिन्दुस्तानी मुसलमान इस जमीन का नहीं है। वे क्यों एक नए वतन की जरूरत महसूस कर रहे हैं। राम की खड़ाऊओं को कदमें रसूल बनाकर चूमने वाले मुसलमान पाकिस्तान क्यों बना रहे हैं?''[7] इन प्रश्नों के उत्तर ढूढँ पाना मुश्किल है क्योंकि जिन्होंने पाकिस्तान निर्माण के लिए मुस्लिम लीग को वोट दिया उन्हें भी शायद यह नहीं मालूम था कि वे क्यों वोट दे रहे हैं वरना यहाँ का मुसलमान यहीं का है यहां की मिट्टी से ही उसे प्रेम है।

राही मासूम रज़ा न नेताओं द्वारा राजनीतिक खेल खेलने के कारण जन–जीवन को अस्त–व्यस्त करने वाली विसंगतियों से पाठकों को अवगत कराया है। गरीबी, शोषण, साम्प्रदायिकता, बेरोजगारी के कारण युवाओं का प्रस्थान आदि समस्याओं को उजागर किया है। 'आधा गाँव' उपन्यास में आजादी के पहले और बाद की घृणित राजनीति एवं पाकिस्तान के निर्माण से जन–जीवन के मस्तिष्क में उठने वाले प्रश्नों को दूर तक गंगौली के आम आदमी की मानसिकता से जोड़कर सोचने व विचारने का उपक्रम किया है।

संदर्भ सूची

1. डॉ. शैलजा, जायसवाल, राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में समकालीन सन्दर्भ, पृ. 143
2. राही मासूम रज़ा, आधा गाँव, पू. 251
3. वही, पृ. 329
4. वही, पृ. 239–240
5. वही, पृ. 58
6. वही, पृ. 284
7. वही, पृ. 251